

Significance of Archaeology in Social Sciences



Editor : Dr. Shantidev Sisodia
SOS in Ancient Indian History, Culture and Archaeology

Jiwaji University, Gwalior (M.P.)

NAAC Re- Accredited "A" Grade University

Published by:

Registrar, Jiwaji University, Gwalior (M.P.)
Proceedings of the National Seminar
March 18-19, 2017

Organised by:

Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology,
Jiwaji University, Gwalior- 474011

All right reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the editors and the publisher.

ISBN: 978-93-5291-609-2

Design by:

Mr. Lalleish Kumar (Research Scholar)
Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology,
Jiwaji University, Gwalior- 474011

Editor

Dr. Shantidev Sisodia,
Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology,
Jiwaji University, Gwalior- 474011, India.
Phone No. 0751-2442720, Mobile No. +919425742232
Email ID: jusisodia@gmail.com

Editorial Board**Prof. S. K. Dwivedi**

Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology,
Jiwaji University, Gwalior- 474011, India.

Prof. Kapil Deo Mishra

Vice-Chancellor
Rani Durgavati Vishwavidyalaya, Jabalpur, Madhya Pradesh, India.

Prof. M. P. Ahirwar

Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology,
Banaras Hindu University, Varanasi, U. P. India.

Prof. Ramkumar Ahirwar

Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology,
Vikram University, Ujjain, Madhya Pradesh, India.

Prof. Avkash D. Jadhav

Department of History, St. Xavier's College,
Mumbai, India.

- 12 ओरछा की ऐतिहासिक इमारते 75-78
डॉ. सुनीता प्रजापति
- 13 दक्षिण कोसल की उल्लेखनीय-प्रतिमाएँ 79-84
डॉ. मंगलानंद झा
- 14 'आधुनिक काल में ग्वालियर की परम्परागत टेराकोटा की शिल्प कला'' 85-87
दिनेश प्रजापति
- 15 'चित्रों में रंगों का समन्वय एवं संयोजन'' 88-90
(प्राचीन काल के विशेष संदर्भ में)
डॉ. संगीता अग्रवाल
- 16 प्राकृतिक विज्ञान का पुरातत्त्व से सम्बन्ध 91-94
डॉ. शान्तिदेव सिसौदिया एवं रश्मि जाटव शोघार्यो
- 17 पुरातत्त्व और मनोविज्ञान की विषय-वस्तु का अंतर्संबंध : ज्ञान के क्षेत्र में नवोन्मेष 95-104
ताराराम
- 18 Technique and Source for Creating Pictographs with Special Reference to Pigment: 105-109
An Appraisal
Sachin Kumar Tiwary, Ph.D.
- 19 कौजिया के सूक्ष्म पाषाणिक उपकरण, भरतपुर, कोरिया (छ.ग.) 110-111
मकसूद अहमद
- 20 भारतीय धातु शिल्प तकनीक 112-114
दिनेश प्रजापति
- 21 गढ़ुल सांस्कृत्यायन की पुरातत्त्व दृष्टि 115-121
डॉ. बी. के. श्रीवास्तव
- 22 पुरातत्त्व एवं पर्यटन 122-124
डॉ. शान्तिदेव सिसौदिया और डा. जितेंद्र सिंह
- 23 आधुनिक जीवन-शैली और आपदाओं का बढ़ता जोखिम- एक अध्ययन 125-128
गणेश पाटिल एवं डॉ. दीपक शर्मा

राहुल सांकृत्यायन की पुरातत्त्व दृष्टि

डॉ. बी. के. श्रीवास्तव

प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

राहुल सांकृत्यायन का नाम भारत वर्ष के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों में से है। राहुल जी एक पुरातत्त्ववेत्ता, अन्वेषक, इतिहासकार, अद्भुत यायावर, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, साहित्यकार एवं एक क्रांतिदर्शी किसान नेता थे। पुरातत्त्व, इतिहास, राजनीति, धर्म, दर्शन, साहित्य, जीवनी, संस्मरण एवं यात्रा साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में राहुल जी ने पर्याप्त सर्जना की जिसका मूल्य शाश्वत है। परन्तु राहुल जी ने सर्वाधिक महत्व पुरातत्त्व एवं इतिहास को ही दिया। राहुल सांकृत्यायन की बहुमुखी प्रतिभा ने जिन विविध दिशाओं में स्थायी उपलब्धियाँ प्राप्त कीं उन सबके मूल में विशेषतः उनकी पुरातत्त्व दृष्टि ही थी। राहुल जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों की संख्या एक सौ बीस से अधिक है।¹ इनमें से अधिकांश ग्रन्थों में उनकी पुरातत्त्व दृष्टि प्रखरता के साथ परिलक्षित होती है। अनेक आयामों में से मुख्यतः दो आयाम ऐसे थे जिन्होंने राहुल जी की पुरातत्त्व दृष्टि को प्रखरता प्रदान की, ये थे - उनका बहु भाषाविद् होना एवं महा यायावर होना। राहुल सांकृत्यायन पाली, प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, चीनी, तिब्बती, अरबी, फारसी, रूसी एवं अंग्रेजी आदि लगभग 36 (छत्तीस) भाषाओं के ज्ञाता थे।² राहुल सांकृत्यायन का यह भाषा ज्ञान देश-विदेश के मूल पुरातात्विक स्त्रोतों के अध्ययन में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुआ। चूँकि राहुल सांकृत्यायन एक महा घुमक्कड़ थे, अतः उन्होंने देश-विदेश का भ्रमण कर अत्यधिक मात्रा में पुरातात्विक सामग्री का अवलोकन भी किया था। राहुल जी द्वारा संपादित ग्रन्थ 'गंगा पुरातत्त्वांक' एवं सृजित ग्रन्थ 'पुरातत्त्व निबंधावली', 'मानव समाज', 'अतीत से वर्तमान', 'एशिया के दुर्गम भूखण्डों में', 'चीन में क्या देखा?', 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'यात्रा के पन्ने', 'मेरी जीवन यात्रा भाग 1 से 5', 'राहुल यात्रावली', 'रूस में पच्चीस मास', 'सोवियत भूमि', 'बोला से गंगा', 'लंका', 'हिमाचल खण्ड 1 एवं 2', 'मध्य एशिया का इतिहास खण्ड 1 एवं 2' एवं 'ऋग्वैदिक आर्य' इत्यादि अनेकानेक ग्रन्थ राहुल सांकृत्यायन की प्रखर पुरातत्त्व दृष्टि के परिचायक हैं।

श्रीलंकावास के दौरान राहुल सांकृत्यायन ने पुरातत्त्व का गहन अध्ययन किया। 16 मई 1927 को राहुल सांकृत्यायन श्रीलंका में केलनिया के विद्यालंकार बिहार में संस्कृत अध्यापक के रूप में पहुँचे।³ यहीं रहकर उन्होंने श्रीलंका की पुरातात्विक रिपोर्टों, भारत तथा विश्व के अन्य देशों की पुरातत्त्व संबंधी पत्रिकाओं का अध्ययन किया। इस प्रकार राहुल सांकृत्यायन की पुरातत्त्व के प्रति रुचि जाग्रत हुई।⁴ श्रीलंका में ही राहुल जी ने त्रिपिटकों का गहन अध्ययन किया। उनके त्रिपिटक ज्ञान को देखकर 3 सितम्बर 1928 को विद्यालंकार बिहार ने राहुल जी को 'त्रिपिटकाचार्य' की उपाधि प्रदान की।⁵ श्रीलंका से ही राहुल सांकृत्यायन ने बौद्ध धर्म ग्रन्थों के अनुशीलन हेतु 1929 ई. में तिब्बत की यात्रा की। इस यात्रा में उन्होंने अत्यधिक मात्रा में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री एकत्रित की। इस सामग्री को 22 खच्चरों पर लादकर वे 6 जून 1930 को भारत आये।⁶ इस सामग्री को राहुल सांकृत्यायन ने पटना संग्रहालय के काशी प्रसाद जायसवाल कक्ष को समर्पित कर दिया।⁷ राहुल जी द्वारा लायी गयी यह पुरातात्विक